सुलझे सपने राही के

मूल लेखक : भारत सासणे
अनुवाद : सुनीता डागा

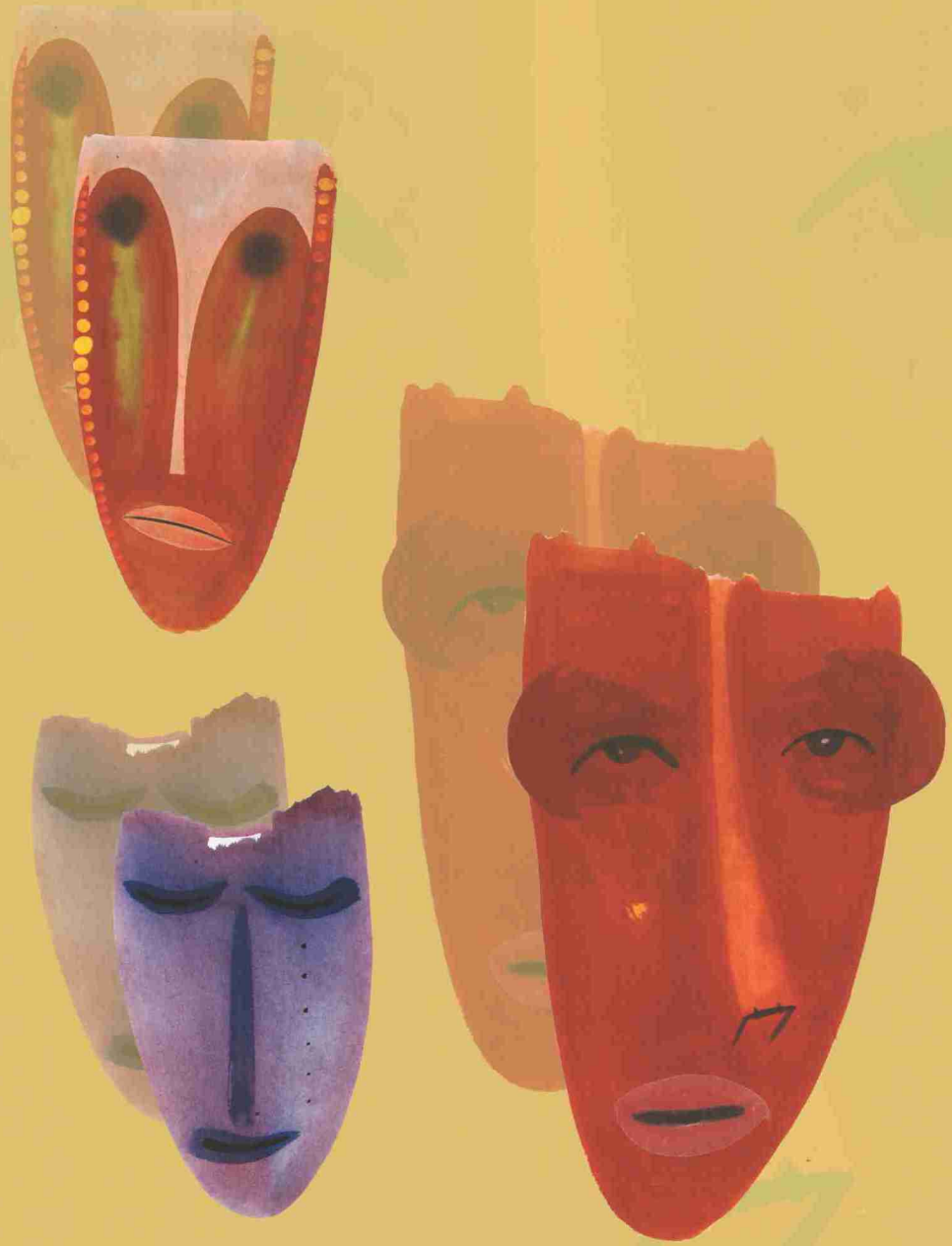

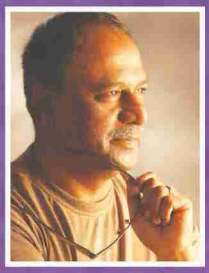

भारत सासणे

भारत सासणे का जन्म 27 मार्च, 1951 को महाराष्ट्र के जालना-तालुका में हुआ। समकालीन मराठी साहित्य-जगत में भारत सासणे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अब तक उनके आठ लघुकथा संग्रह, आठ दीर्घकथा संग्रह, पाँच उपन्यास, चार नाटक तथा एकांकी संग्रह, ललित आलेख संग्रह, बाल-साहित्य के अंतर्गत छह किताबें कुल मिलाकर 33 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। मराठी के कई सम्मानजनक और महत्वपूर्ण पुरस्कारों से वे सम्मानित हो चुके हैं।

महाराष्ट्र सरकार की ओर से सर्वोत्तम साहित्य-सृजन हेतु सात बार उन्हें पुरस्कार मिल चुके हैं। इसके अलावा मौलिक साहित्य-सृजन के लिए महाराष्ट्र फ़ाउंडेशन पुरस्कार, लाभसेटवार पुरस्कार आदि अमेरिका में घोषित पुरस्कारों के साथ उन्हें 35 पुरस्कार मिल चुके हैं।

''राहीच्या स्वप्नांचा उलगडा'' मराठी का एक बहुचर्चित उपन्यास रह चुका है। इसकी अनूठी शैली पर विशेष चर्चा हुई है।

सम्पर्क : 204, लक्ष्मी इनक्लेव, गणेश खिंड रस्ता, मॉडेल कॉलोनी, शिवाजीनगर, पुणे-422016
ई-मेल : bjsasne@yahoo.co.in
मोबाइल : 9422073833

सुनीता डागा

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी साहित्य) । हिंदी-मराठी में अनुवादरत
प्रकाशन : ● मराठी उपन्यास 'होरपळ' (दलित आत्मकथा - ल. सि. जाधव) का हिंदी अनुवाद 'दाह' नाम से किया एवं अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद 2016को प्रकाशित। ● गुजराती उपन्यास 'फूलजोगनी'- (डॉ. केशुभाई देसाई) का 'फूलपरी' नाम से मराठी में अनुवाद एवं मधुश्री प्रकाशन, पुणे 2017 को प्रकाशित। ● मराठी के चर्चित कवि 'गणेश मरकड़' के कविता संग्रह का हिन्दी अनुवाद, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर 2017 को प्रकाशित।
हिंदी-मराठी पत्रिकाओं में अनुदित साहित्य निरंतर प्रकाशित।

संपर्क : कपिल उपवन - 302, लेक टाउन रोड़, बिबवेवाडी, पुणे, 37
मो. : 8149176638, इमेल : sunitadaga1@gmail.com

ISBN-978-81-926017-8-6

सा प्र साखी प्रकाशन

सुलझे सपने राही के

मूल उपन्यास 'राहीच्या स्वप्नांचा उलगडा'
मराठी से अनुदित

सुलझे सपने राही के

मूल कृति : भारत सासणे
अनुवाद : सुनीता डागा

साखी प्रकाशन

ISBN: 978-81-926017-8-6
सर्वाधिकार
अनुवादक

प्रकाशक
साखी प्रकाशन
509, जीवन वहार, पी.एण्ड.टी. चौराहा,
भोपाल (म.प्र.)
e-mail : samaysakhi@gmail.com
website - www.samaykesakhi.in
मो. : 09713035330, फ़ोन : 0755–4030221

प्रथम संस्करण

मूल्य

आवरण
.....
.....
मुद्रक
दृष्टि आफसेट, 37 प्रेस काम्पलेक्स
जोन–1, एम.पी. नगर, भोपाल, (म.प्र)

निरंतर उठते, उमड़ते-घुमड़ते सवालों के बवंडर में उलझी रही। किसी प्रसिद्ध किताब में पढ़ी उस पंक्ति ने, ''सपने हकीकत में उतरते हैं, अपितु उन्हें हकीकत में उतारना पड़ता हैं'', उसके मन-मस्तिष्क को फिर से विचारों के आवर्तन में डाल दिया। बुद्धिमान हैं राही। जाहिर हैं, सवाल तो उभरेंगे ही। कोई साधारण हो, तो उसके लिए सब कितना आसान हो जाता हैं। कहीं उधेड़बुन नहीं, कोई सवाल नहीं। बिना किसी स्वप्न की, आराम की नींद सोते रहिये। किन्तु यहाँ पर ऐसा कतई नहीं हैं। राही का मस्तिष्क सोचता हैं, प्रश्न करता हैं, निरंतर कुछ जानना चाहता हैं। फिर सवालों की एक लम्बी झड़ी-सी लग जाती हैं। स्वयं से ही टकराते सवाल। बार-बार उठते। मुझे तो स्वप्न आते हैं।

फिर किस तरह से उस समय, जब स्वप्न मेरी निद्रा को छेदते-बिधते आ खड़ा होते हैं, मस्तिष्क की सारी नसें खिंच-खिंच-सी जाती हैं। किसी तानपुरे की तार की तरह। (यह भी तो महसूस होता है) मस्तिष्क के भीतर-ही-भीतर घिरी हुई, वह नीले-जामुनी रंगों की गहरी परतें। फिर हर खींची गयी शिरा-शिरा से प्रस्फुटित होता हुआ वह स्वप्न! जैसे कोई गीत छेड़ दिया गया हो। कितनी सहजता से छेड़ा गया... एक दुखमय स्वप्न। परेशान करता हुआ, झकझोरता हुआ। फिर यह कोई एकबारगी तो नहीं हैं। कई-बई बार होती वह अनुभूति। बार-बार उस स्वप्न से टकराती राही। एक रहस्यमय स्वप्न.....

किसी अथाह, अंधी खोह में भटक गयी हूँ मैं। जिसका कोई ओर-छोर नहीं, ना ही कोई शुरुआत तथा ना ही कोई अंत, ऐसी कोई खोह। एक तरह से कैविटी ही कह सकते हैं और ऐसे उस रहस्यमयी, तिलिस्मी विवर में उलझी हुई मैं, कुछ खोज रही हूँ। तनाव से घिरी, भ्रमित-सी। टटोलते हुए, कुछ खोजने का वह प्रयास-निरंतर। अब यह क्या ढूँढ़ना हैं, यह तो पता हैं स्वप्न में। तभी तो उस ढूँढ़ने को लेकर कोई सवाल नहीं उभरता हैं जेहन में! अर्थात सब कुछ ज्ञात हैं,

स्पष्ट है। - ! पर जब नींद खुलती है, तब स्वयं से कैसे पूछे कि किस चीज की तलाश चल रही है? स्वप्न तो समाप्त हो चुके। यह कैसी उधेड़बुन है? यद्यपि स्वप्न भी कहाँ पूर्णतया स्पष्ट हैं? एक धुंधला-सा गर्द कोहरा छाया हुआ रहता है, नजरों के सामने और कुछ धूमिल, अस्पष्ट-सा दिखाई पड़ता। फिर वही सुरंग। उसके पश्चात् वह विवर या पाताली अंधकूप.... और जगते ही पुनश्च उस खोज की खोज..... शिद्दत से उसकी महसूस होती जरुरत और बेबस, असहाय राही। कई सारे सवालों से घिरी। उथल-पुथल मचाते सवाल। कई-कई बार.....

सपनों की परिभाषा जानती है राही। किताबें कई बातें समझा देती हैं। अब यह ठीक है कि व्याख्या समझ गयी है। थोड़ा बहुत उनके बारे में जानने लगी है वह। पर यह तो समाधान न हुआ। इससे स्वप्न को रोका तो नहीं जा सकता। वह तो आ खड़ा हो जाता है। बार-बार.... गो कि कभी-कभी संदर्भ बदलते रहते हैं उसके। यदा-कदा स्वरूप भी बदला हुआ महसूस होता है। किन्तु उसका सार? उसमें कोई फर्क नहीं है। एक निरंतर भटकन और अनवरत शोध! वही टटोलना, तथा कुछ ढूँढना। (यह टटोलना किस वज़ह से? क्या वहां अंधकार है?)

बाबा की, भाऊसाहब की लिखने की रोजमर्रा की वह कापी। अब वह कापी किस तरह की है, पता नहीं। किन्तु बंधे हुए कई पन्ने हैं। कुछ जोड़-बाकी, हिसाब-किताब भी दर्ज़ किया हुआ है। राही के लिए इतना तो स्पष्ट हो चुका है कि उस कापी की खोज करनी है - बाबा के जाने के पश्चात। जीवन की बाजी लगाकर, जी-जान से उस कापी को ढूँढ़ने का काम करना है। परंतु स्वप्न तो उससे कही पहले का है। इस खोज से भी पहले। राही को मथता हुआ, उसके चेतन-अवचेतन को खँगालता हुआ। यह खोज तो वास्तविक है। जिसकी एक दिशा निर्धारित है। किंतु एक खोज, जो स्वप्न में है? इस कापी को जानने से कही पहले, वह कुछ ढूँढ़ने का सिलसिला-अज्ञात-सा। टटोलते हुए निरंतर ढूँढना। एक खोह, स्वप्न में, जिसका कोई आदि-अंत नहीं, ओर-छोर नहीं और उसमें चल रही वह खोज। एक बैचनी, छटपटाहट की अजीब-सी अनुभूति है। एक कोहरा-सा छाया हुआ है। कोई संगीत की धुन भी बजती रहती है-निरंतर। उसी स्वप्न में। हालांकि पार्श्वसंगीत की तरह नहीं है वह धुन। नाटक-सिनेमा में बजता हैं ऐसा संगीत। राही जानती है, ऐसा कुछ नहीं है। वरना उसका निराकरण भी संभव हो जाता। ऐसा कतई नहीं है। खोज, वह खोह... और फिर एक नीला, आंतरिक फीका-फीका रंग। कोई वासनात्मक दृष्टि से देख रहा है अपनी ओर। जिससे शरीर सिमट-सिकुड़कर एक सकुचाहट से भर गया है। यह भी उसी स्वप्न का एक भाग....।